Cambridge IGCSE

Cambridge International Examinations
Cambridge International General Certificate of Secondary Education

CANDIDATE NAME	
CENTRE NUMBER	
CANDIDATE NUMBER	

0084715162

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/01**

Paper 1 Reading and Writing **February/March 2017**

2 hours

Candidates answer on the Question Paper.

No Additional Materials are required.

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

Write your Centre number, candidate number and name on all the work you hand in.
Write in dark blue or black pen.
Do not use staples, paper clips, glue or correction fluid.
DO **NOT** WRITE IN ANY BARCODES.

Answer **all** questions.

The number of marks is given in brackets [ ] at the end of each question or part question.

The syllabus is approved for use in England, Wales and Northern Ireland as a Cambridge International Level 1/Level 2 Certificate.

This document consists of **13** printed pages and **3** blank pages.

DC (KN/SG) 128205/4
© UCLES 2017

CAMBRIDGE
International Examinations

[Turn over

खंड 1

अभ्यास 1 प्रश्न 1–6

'मंगल ग्रह की यात्रा' पर निम्नलिखित आलेख पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

उन्नीस साल की नवीना प्रसाद अपने मां-बाप की अकेली संतान हैं, पर उन्हें इसकी फ़िक्र नहीं कि अगर मंगल ग्रह पर जाने का सपना पूरा हो भी जाए तो वहां से वापसी की कोई गारंटी नहीं है। उनका कहना है, "अपने सपने पूरे करने के लिए थोड़ा बलिदान तो देना ही पड़ता है।" चेन्नई में इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहीं नवीना ने 2013 में उस कार्यक्रम के लिए आवेदन दिया था जिसके तहत 2024 में लोगों को मंगल ग्रह पर भेजने की योजना है। अनुमान है कि यह अंतरिक्ष यान मंगल ग्रह पर साल 2025 तक पहुंचेगा।

दरअसल नीदरलैंड की 'मार्स वन' नाम की एक ग़ैरसरकारी संस्था मंगल ग्रह पर बस्ती बसाने की योजना बना रही है। इस योजना के भीतर प्रतियोगिता द्वारा सदस्यों को चुना जा रहा है। उसी प्रतियोगिता में तीन भारतीयों का नाम उन सौ लोगों की सूची में आ गया है, जो अगले चरण में आगे जाएंगे। सूची में नाम आने पर नवीना ने ख़ुशी जताते हुए कहा, "मैं बेहद ख़ुश हूं कि प्रतियोगिता की इस कड़ी तक पहुंच गई हूं। मुझे हमेशा से अंतरिक्ष विज्ञान में बहुत रुचि थी और फिर किसी दूसरे ग्रह पर जाकर रहने का मौका शायद ही किसी को मिलता है। मुझे चुनौती भरे काम बहुत पसंद हैं और अगर मैं इस प्रतियोगिता में आगे जाती हूं तो ज़रूर यह जोखिम उठाना चाहूँगी।"

नवीना ने बताया कि शुरुआत में उनके माता-पिता ने उनका साथ नहीं दिया, लेकिन जब उनका चयन सौ लोगों में हुआ तो उन्हें उन पर गर्व होने लगा है। उनका कहना था, "शुरुआत में मेरे माता-पिता नहीं चाहते थे कि मैं इस प्रतियोगिता में हिस्सा तक लूं। फिर उन्हें लगा कि मेरा चयन एक या दो चरणों के बाद नहीं हो पाएगा। लेकिन अब जब मैं यहां तक पहुंच गई हूं, तो उनका डर गर्व में बदल गया है।" मंगल ग्रह पर जाने की प्रतियोगिता का चौथा और आख़िरी चरण अभी बाक़ी है। इसमें कुल चार लोगों को चुना जाएगा।

जब मैंने नवीना से पूछा कि अगर उनका नाम इन चार लोगों में आता है और वह मंगल ग्रह जा पाती हैं, तो उन्हें किस चीज़ की सबसे ज़्यादा याद आएगी। नवीना ने कहा, "मुझे सबसे ज़्यादा भारतीय खानपान की याद आएगी। मुझे पराठे बहुत पसंद हैं, ख़ासतौर पर गोभी के पराठे। मुझे ये पराठे इतने पसंद हैं कि एक बार मैं इन्हें खाना शुरू करती हूं तो रुक नहीं पाती।" बहरहाल मंगल पर जाने तक की राह अभी बहुत लंबी है और फिलहाल नवीना गोभी के पराठों का भरपूर आनंद ले सकती हैं।

© UCLES 2017

1 नवीना प्रसाद के अनुसार सपनों को साकार करने के लिए क्या करना ज़रूरी है?

.... [1]

2 आगामी चरण में जाने के लिए कितने प्रतियोगी चुने गए?

.... [1]

3 नवीना के अनुसार कहाँ जाने का अवसर कठिनाई से मिलता है?

.... [1]

4 अगले चरण में चुने जाने के बाद नवीना क्या चाहेंगी?

.... [1]

5 प्रतियोगिता के दौरान नवीना के माता-पिता की प्रतिक्रिया कैसे बदली?

.... [1]

6 मंगल ग्रह पर जाने से पूर्व नवीना किस चीज़ का मज़ा उठा सकती हैं?

.... [1]

[अंक: 6]

अभ्यास 2 प्रश्न 7

अपने मनचाहे संगीतकार से मिलिए
पृथ्वी थियेटर, जुहू,
चर्च रोड
मुंबई **400 049**
दूरभाष **91 (22) 28159588**

प्रदेश के स्कूली बच्चों में हिन्दुस्तानी संगीत के प्रति रूझान पैदा करने के लिए पृथ्वी थियेटर में प्रसिद्ध संगीतकारों की मदद से एक कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यशाला में आप अपने मनचाहे संगीतकार से न सिर्फ़ मिल सकते हैं, बल्कि उनके बहुमूल्य अनुभवों से लाभ भी उठा सकते हैं। कृपया इस कार्यशाला में शामिल होने के लिए आवेदन करें।

यह कार्यशाला मुंबई सरकार एवं पृथ्वी थियेटर द्वारा स्कूली बच्चों में हिन्दुस्तानी संगीत के प्रति जागरूकता एवं रूझान पैदा करने के लिए आयोजित की जा रही है। यह कार्यशाला एक हफ्ते के लिए होगी। इस कार्यशाला के विभिन्न सत्रों में स्कूली छात्रों को शास्त्रीय संगीत के विभिन्न पक्षों पर जानकारी दी जाएगी। साथ ही कई नामी संगीतकारों के विचार सुनने का अवसर भी मिलेगा। यह कार्यशाला पूर्णतः निःशुल्क है। यह पूरा आयोजन मुंबई सरकार द्वारा किया जा रहा है।

नादिरा शाह की उम्र पंद्रह वर्ष है। उसे हिन्दुस्तानी संगीत बहुत पसंद है। वह पिछले 3 साल से हिन्दुस्तानी संगीत सीख रही है। पिछले दो वर्षों में स्कूल समारोह के लिए वह अपनी संगीत प्रस्तुति दे चुकी है। लेकिन वह शास्त्रीय संगीत की बारीकियों को जानना चाहती है। साथ ही वह स्कूल के स्तर पर संगीत प्रतियोगिताओं को बढ़ावा देना चाहती है। अपने स्कूल में संगीत संबंधी गतिविधियों के प्रोत्साहन के उद्देश्य से वह इस कार्यशाला में जाना चाहती है। वह सोमवार से शुक्रवार स्कूल जाती है। उसका स्कूल 2 बजे समाप्त होता है। लिहाज़ा, सप्ताह के दौरान वह कार्यशाला में नहीं जाना चाहती। सप्ताहांत में वह सुबह संगीत सीखने जाती है इसलिए दोपहर का समय सर्वाधिक उचित है। वह मुंबई के कांदिवली इलाके में 23 लक्ष्मण अपार्टमेंट, में रहती है। उसका ई-मेल है ns52@hotmail.com और उसका दूरभाष न. 23638967 है।

आप अपने को नादिरा मानकर नीचे दिए गए आवेदन पत्र को भरिए।

पृथ्वी थियेटर, जुहू, चर्च रोड
मुंबई 400 049
दूरभाष 91 (22) 28159588

आवेदक का पूरा नाम - ....

(सही का निशान लगाएं) आयु - **11–13** ☐ **14–16** ☐ **17–19** ☐

ई-मेल - ns52@hotmail.com

पूरा पता - ....

....

....

निम्नलिखित विकल्पों के माध्यम से बताइए कि आप कब उपलब्ध हैं। [कोष्ठक में सही का निशान लगाएं]

☐ **सप्ताह के दौरान।**
☐ **सप्ताहांत में।**

निम्नलिखित अवधियों में से उचित अवधि चुनें। [कोष्ठक में सही का निशान लगाएं]

☐ **सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक**
☐ **दोपहर 2 बजे से शाम 4 बजे तक**

शास्त्रीय संगीत संबंधी किन्हीं दो अनुभव के बारे में बताइए।

....

....

....

[अंक : 7]

अभ्यास 3 प्रश्न 8–10

'पतंग उत्सव की परंपरा' शीर्षक से निम्नलिखित लेख पढ़िए।

पतंग उड़ाने की परम्परा भारत तथा विदेशों में काफी प्राचीन है। मानव शुरू से ही आसमान में उड़ते परिन्दों को देख कर स्वयं भी उड़ने की कल्पना करता था, पतंगबाज़ी इसी कल्पना को साकार करती है। दुनियाभर के देशों में पतंगबाजी की अनेक परम्पराएँ विद्यमान है। 2500 वर्ष पुरानी ग्रीक कलाकृतियों में पतंगबाज़ी के चित्र अंकित हैं। जबकि चीन में पतंगबाज़ी का इतिहास दो हजार साल पुराना माना गया है। चीन के सेनापति हानसीन ने कई रंगों की पतंगें बनाईं और उन्हें उड़ाकर अपने सैनिकों को संदेश भेजे। विश्व के इतिहासकार पतंगों का जन्म चीन में ही मानते हैं।

भारत में ईसा पूर्व 3500 से 2750 के मध्य में सिन्धु संस्कृति में पतंगों के चित्र तथा चित्रलिपि मिलती है। पतंगों का विकास यूरोप तथा पूर्व के देशों में बड़ी तेजी से हुआ। अमरीका, इंग्लैण्ड, हाँगकांग, जापान, इटली, आस्ट्रेलिया आदि देशों में पतंगें बनने और उड़ने लगीं। लोगों ने पशु पक्षियों के आकार की पतंगें बनाकर उड़ाना शुरू किया। पारंपरिक तौर पर कभी गरूड़ की आकृति बनाई जाती जिसमें उसके फैले हुए पंखों को रंगीन कागज़ी लहरियों से चित्रित किया जाता तो कभी सर्प की आकृति जिसके भीतर उसके फन को चमकीले रंगों से सजाया जाता था। जापानी जनता भी विविध शैलियों की पतंगें बनाती है। जापान में पतंगबाज़ी मई में की जाती है। उनका मानना है कि पतंग उड़ाने से देवता खुश हो जाते हैं। जापान के होजीवाना शहर में प्रतिवर्ष पतंगबाजी की प्रतियोगिता की जाती है।

अब परंपरागत पदार्थ - कागज़, खपच्ची और कपड़े के अलावा नाइलोन, पोलीथीन, प्लास्टिक आदि का प्रयोग भी पतंग बनाने में किया जाने लगा है। मांझे को काँच, सरेस, रंग आदि से बनाया जाता है। अच्छी पतंग और अच्छा मांझा बरेली, कानपुर, लखनऊ, ग्वालियर आदि का होता है। सूरत का मांझा भी प्रसिद्ध है।

भारत में प्रतिवर्ष मकर संक्रांति पर पतंगोत्सव देश के कई भागों में मनाया जाता है। यहां के लगभग सभी प्रदेशों में पतंग उड़ाई जाती है और इन सभी प्रदेशों में पतंगों को अलग-अलग नामों से जाना जाता है। अहमदाबाद शहर पूरे भारत में ही नहीं विश्व में भी पतंगबाज़ी के लिए प्रसिद्ध है। वहां मकर संक्रांति पर पतंग उत्सव की छटा देखते ही बनती है। पूरे देश के पतंगबाज़ अहमदाबाद आते हैं। यहाँ पर सन 1989 से प्रति वर्ष अन्तरराष्ट्रीय पतंग महोत्सव मनाया जाता है। अहमदाबाद में एक प्रसिद्ध पतंग म्यूज़ियम भी बनाया गया है। पतंगोत्सव पर लोगों में पतंगबाजी का जुनून सवार हो जाता है। जब चारों तरफ 'वो काटा', 'वो मारा' का शोर फैल जाता है, तब न सिर्फ पतंगबाज़ बल्कि आम लोग भी इस नज़ारे की ओर खींचे चले आते हैं।

अभ्यास 3 प्रश्न 8–10

आपको स्कूल पत्रिका के लिए पतंग उत्सव पर निबंध लिखना है। 'पतंग उत्सव की परंपरा' लेख में से नीचे दिए गए प्रत्येक शीर्षक के अंतर्गत नोट लिखें जिसपर आपका निबंध आधारित होगा।

8 पतंगबाज़ी के प्राचीन प्रमाण और इसको उड़ाने के पीछे निहित धारणाएँ।

- .... [1]
- .... [1]
- .... [1]

9 पतंग निर्माण के परंपरागत रूप और पदार्थ।

- .... [1]
- .... [1]

10 उत्सव मकर संक्राति के प्रमुख आकर्षण।

- .... [1]
- .... [1]

[अंक: 7]

अभ्यास 4 प्रश्न –11

निम्नलिखित आलेख 'लौटना ही होगा जैविक खेती की ओर' का सारांश लिखिए और अपने सारांश में रासायनिक कृषि के नकारात्मक पहलुओं को अपने शब्दों में बताइए।
आपका सारांश 100 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
संगत बिन्दुओं के समावेश के लिए 6 अंक और भाषिक अभिव्यक्ति के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। पाठांश से वाक्य उतारना उचित नहीं है।

भारत में जैविक खेती की अवधारणा नई नहीं है। हमारे यहाँ परम्परा से इसी तरह से ही खेती होती रही है। स्वतन्त्रता मिलने के बाद देश के खाद्यान्न के स्तर पर आत्म निर्भर बनने का प्रयास किया गया। साठ-सत्तर के दशक में हरित क्रान्ति के तहत खेती के परम्परागत तरीकों में परिवर्तन किए गए। इससे कृषि उत्पादन में भले ही हमने अपेक्षाकृत और कई उपलब्धियाँ हासिल कर ली हो पर लम्बे समय बाद इसके बुरे परिणाम भी हमारे सामने हैं।

इन बुरे प्रभावों ने भारत ही नहीं दुनिया भर के विकासशील देशों को इस पर फिर से सोचने पर विवश कर दिया है। एक तरफ जहाँ महँगे रासायनिक खाद और कीटनाशकों ने खेती की लागत को कई गुणा बढ़ा दिया है वहीं दूसरी ओर उनकी वजह से ज़मीन के साथ-साथ खेती के उत्पादों से मानव शरीर को भी कई तरह की बीमारियाँ होने लगी हैं। डॉक्टरों के मुताबिक इन विषैले प्रभावों में कैंसर भी शामिल है। खेतों में ज़मीन की सेहत भी बिगड़ती जा रही है। जहाँ फसलों की लागत दिनों-दिन बढ़ती जा रही है, वहीं उत्पादन घटता जा रहा है। इन चुनौतियों से लड़ने का एक ही विकल्प है- अपनी जड़ों की ओर लौटना। हमें फिर से अपनी परम्परागत खेती को अपनाना पड़ेगा। जैविक खेती अब नारा नहीं जरूरत बनती जा रही है।

अधिक उत्पादन की चाह में किसानों ने रासायनिक खाद का लगातार बेहिसाब इस्तेमाल किया है। इसके फलस्वरूप जमीन में नमक की मात्रा काफी बढ़ गई है। कई जगह तो ऊपरी सतह करीब एक फीट तक बुरी तरह खराब हो चुकी है। इसकी वजह से खेतों में बारिश के दौरान पानी का रिसाव भी नहीं हो पाता। खेतों में कीटनाशक छिड़कते समय कई हादसे भी होते रहते हैं। इन दवाइयों में इतने घातक रसायन मिले होते हैं कि इनके छिड़काव करने में ज़रा सी भी असावधानी से ये किसानों की मौत का कारण बन जाती है।

अब रासायनिक खाद और कीटनाशकों की जगह जैविक खादों और कीटनाशकों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। कई किसान केंचुआ खाद, कम्पोस्ट खाद आदि का इस्तेमाल कर रहे हैं। कुछ किसान कीटनाशकों के लिए नीम और तम्बाकू से बनी वैकल्पिक दवाइयां भी इस्तेमाल करते हैं। इसके सुखद परिणाम भी अब हमारे सामने आने लगे हैं। इससे खेतों की जमीनी सेहत सुधरी है और जैविक उत्पादों की माँग भी कई गुणा बढ़ी है। लोग महँगे दामों में भी जैविक उत्पाद ख़रीद रहे हैं।

‘लौटना ही होगा जैविक खेती की ओर’

[अंक: 10]

© UCLES 2017

खंड 2

अभ्यास 5 प्रश्न 12–18

निम्नलिखित आलेख को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मेरी मां कई सालों से नोकिया मोबाइल के एक सस्ते-टिकाऊ पुराने मॉडल से काम चला रही हैं। उन्हें अपने फ़ोन में सिर्फ लाल और हरे बटन का प्रयोग मालूम है। हरे से फ़ोन मिलाया या बात की और लाल से फ़ोन काट दिया। कभी किसी नए नंबर से आए फोन का नंबर उन्हें रखना होता है तो वह मुझसे या मेरे भाई-बहन से आग्रह करतीं हैं। लेकिन हाल ही में उन्होंने एक स्मार्टफ़ोन की मांग की। मां आठवीं क्लास तक पढ़ी हैं और 16 साल की उम्र में उनकी शादी एक किसान परिवार के नौजवान यानी मेरे पापा से हुई। बचपन की धुंधली सी यादों में मुझे अच्छे से याद है कि कैसे मेरी मां अपने सिर पर चारे से भरा टोकरा एक हाथ से संभालती थी और दूसरे हाथ से मुझे पकड़ कर खेतों तक ले जाती थीं।

हाल ही में मां ने जब स्मार्टफ़ोन ख़रीदने की ज़िद की, तो मुझे ऐसा लगा मानो वह एक बच्चे की ज़िद हो जो शौकिया खिलौना ख़रीदेगा और फिर दो-चार दिन बाद उसका मन भर जाएगा। ख़ैर हमने मां की बात मान ही ली और उन्हें स्मार्टफ़ोन की दुकान पर ले गए। लेकिन मैं ये देख कर हैरान थी कि मां हर फ़ोन को यूं परख रही थी मानो उसके बारे में उन्हें ख़ासी जानकारी हो। फिर जब बात आई दाम की तो दो फ़ोन ऐसे थे जिनमें फ़र्क महज़ एक फ्रंट कैमरे का था। ज़ाहिर है बिना फ़्रंट कैमरे वाला फ़ोन सस्ता था। लेकिन मां ने आंखे मटकाते हुए महंगे वाले फ़ोन पर हाथ रखा और कहा, 'तुम लोग अपने फ़ोन से सेल्फ़ी खींचते हो तो मैं क्यों न खींचूं भला?' मां ने मुझे और मेरे भाई-बहनों को कई सालों से स्मार्टफ़ोन इस्तेमाल करते हुए देखा है। तो शायद हमें देख-देख कर सीख गई हों। तो ज़ाहिर सी बात है कि पहला ऐप उन्होंने वही डाउनलोड किया जिसे वो रोज़ हमें इस्तेमाल करते हुए देखती हैं – व्हट्सऐप।

मां ख़ुश है कि यदि किसी कारण से मैं फ़ोन नहीं उठा पा रही हूं, तो चिंता की कोई बात नहीं है। उनकी जिज्ञासा भरी आंखें कुछ ढूंढ रही थीं नए फ़ोन में। उन्होंने पूछा तेरी मौसी के फ़ोन में ऐसी-ऐसी चीज़ें हैं कि बटन दबाते ही हर तरह की आरतियां और भजन बजने लग जाते हैं। तो उनके फ़ोन में ऐप डाउनलोड किया जिसका नाम है – 'हनुमान चालीसा ऑडियो'। अब हर सुबह आरती करते हुए मां उस ऐप को खोलती हैं और चालीसा का ऑडियो चलना शुरु! मैं भारत के गांवों की डिजिटल तस्वीर दर्शाने वाली कहानियां इकट्ठी करने के लिए दिल्ली से बाहर गांवों और छोटे कस्बों में गई। लेकिन कभी ये नहीं सोचा था कि मेरे ख़ुद के घर में ही एक ग्रामीण डिजिटल क्रांति हो रही है। ये क्रांति ही तो है जब मां हमें बच्चे की तरह चिढ़ाते हुए कहती हैं, 'तुम्हारे फ़ोन तो पुराने हैं। दम तो मेरे स्मार्टफ़ोन में है।'

© UCLES 2017

कृपया प्रश्न 12 से 15 तक के उत्तर सही या ग़लत के कोष्ठक में ✓ का निशान लगाकर दीजिए। यदि वाक्य ग़लत है तो उसे पाठांश के आधार पर ठीक कीजिए।

	सही	ग़लत
उदाहरण - मेरी माँ शुरू से स्मार्टफोन इस्तेमाल करती हैं। **औचित्य - मेरी मां सालों से नोकिया के पुराने मॉडल से काम चला रही हैं।**	☐	✓
12 अगर कोई फोन नंबर अपने फोन में रखना हो तो वह अक्सर अनजान लोगों से मदद लेती हैं।	☐	☐
13 बचपन की यादों में मुझे हल्का-सा याद है कि कैसे माँ खेतों में हमको सम्भालती थीं।	☐	☐
14 दुकान पर माँ ने फोन को इस तरह परखा जैसे वह स्मार्टफोन से अनभिज्ञ न हों।	☐	☐
15 आखिर में उन्होंने बिना फ़्रंट कैमरे वाला फ़ोन खरीदने की मांग की।	☐	☐

12 ....

13 ....

14 ....

15 ....

अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

16 **स्मार्टफोन ख़रीदने के बाद उनकी आँखें क्या खोज रही थीं?**

....

17 लेखिका डिजिटल भारत की कहानियाँ ढूढ़ने कहाँ कहाँ जाती हैं?

....

18 अंतिम अनुच्छेद के आधार पर लेखिका को क्या ज्ञात हुआ?

....

[अंक: 10]

अभ्यास 6 प्रश्न 19

इंटरनेट के युग में यात्रा की प्रासंगिकता

आप किस हद तक इस मत से सहमत हैं कि इंटरनेट के द्‌वारा घर बैठे किसी भी तरह की जानकारी को प्राप्त किया जा सकता है। ऐसे में अन्य देश-विदेश की यात्रा करना आवश्यक नहीं है। इस विषय पर अपने विचारों को निबंध के रूप में स्कूल पत्रिका के लिए लिखिए। आपका विवरण विषय से संबंधित जानकारी पर केन्द्रित होना चाहिए।

आपका विवरण 150 से 200 शब्दों से अधिक नहीं होनी चाहिए।

लिखित विवरण पर अंर्तवस्तु के लिए 10 अंक और सटीक भाषा के लिए भी 10 अंक निर्धारित हैं।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

© UCLES 2017

[अंक: 20]

BLANK PAGE

© UCLES 2017

BLANK PAGE

© UCLES 2017

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge International Examinations Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cie.org.uk after the live examination series.

Cambridge International Examinations is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is itself a department of the University of Cambridge.